रविवार 17 मई, 2026

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता **31: 14, 15**

"हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रखा है, मैं ने कहा, तू मेरा परमेश्वर है। मेरे दिन तेरे हाथ में है।"

उत्तरदायी अध्ययन: उत्पत्ति **5: 1, 2, 18, 22-24**

भजन संहिता **37: 37**

अय्यूब **11: 17**

1 आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया;
2 उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा।
18 जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, जब उसने हनोक को जन्म दिया।
22 और मतूशेलह के जन्म के पश्चात हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
23 और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई।
24 और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।
37 खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहने वाले पुरूष का अन्तफल अच्छा है।
17 और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक प्रकाशमान होगा; और चाहे अन्धेरा भी हो तौभी वह भोर सा हो जाएगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता **92: 1, 2, 10 (मेरा), 12-14**

1 यहोवा का धन्यवाद करना भला है, हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना;
2 प्रात:काल को तेरी करूणा, और प्रति रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना,
10 ... परन्तु मेरा सींग तू ने जंगली सांढ़ का सा ऊंचा किया है; मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं।
12 धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे।
13 वे यहोवा के भवन में रोपे जा कर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे।
14 वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,

2. भजन संहिता **139: 1-4, 13-18**

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1 हेयहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है॥
2 तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
3 मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
4 हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।
13 मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।
14 मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।
15 जब मैं गुप्त में बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था, तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं।
16 तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा।
17 और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है॥
18 यदि मैं उन को गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूं, तब भी तेरे संग रहता हूं॥

3. इब्रानियों 7: 1 (यह)-4, 15, 16

1 ... यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है; जब इब्राहीम राजाओं को मार कर लौटा जाता था, तो इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी।
2 इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात शांति का राजा है।
3 जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा॥
4 अब इस पर ध्यान करो कि यह कैसा महान था जिस को कुलपति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया।
15 ओर जब मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न होने वाला था।
16 जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, परअविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त हो तो हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रगट हो गया।

4. यूहन्ना 9: 1-7

1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?
3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।
4 जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।
5 जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं।

6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

5. मरकुस 7: 31-35

31 फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकलकर दिकपुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर पहुंचा।
32 और लोगों ने एक बहिरे को जो हक्ला भी था, उसके पास लाकर उस से बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे।
33 तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उस की जीभ को छूआ।
34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह, अर्थात खुल जा।
35 और उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा।

6. लूका 8: 41, 42 (से *1st* .), 49-55

41 और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पांवों पर गिर के उस से बिनती करने लगा, कि मेरे घर चल।
42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर थी: जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥
49 वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के यहां से आकर कहा, तेरी बेटी मर गई: गुरु को दु: ख न दे।
50 यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह बच जाएगी।
51 घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़ और किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया।
52 और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा; रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है।
53 वे यह जानकर, कि मर गई है, उस की हंसी करने लगे।
54 परन्तु उस ने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लड़की उठ!
55 तब उसके प्राण फिर आए और वह तुरन्त उठी; फिर उस ने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।

7. 1 कुरिन्थियों 15: 51, 53, 58

51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
58 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **81: 17-18**

भगवान की समानता में मनुष्य के रूप में विज्ञान में पता चला अमर होने में मदद नहीं कर सकता।

2. **76: 18 (कष्ट)-31**

पीड़ा, पाप, मरणासन्न मान्यताएँ अवास्तविक हैं। जब दैवीय विज्ञान को सार्वभौमिक रूप से समझा जाएगा, तो उनका मनुष्य पर कोई अधिकार नहीं होगा, क्योंकि मनुष्य अमर है और दैवीय अधिकार द्वारा जीवित है।

पाप रहित आनन्द, - जीवन की पूर्ण सद्भाव और अमरता, एक दिव्य सुख या पीड़ा के बिना असीमित दिव्य सौंदर्य और अच्छाई का होना, - एकमात्र सत्य, अविनाशी पुरुष का निर्माण करता है, जिसका अस्तित्व आध्यात्मिक है। अस्तित्व की यह स्थिति वैज्ञानिक और अक्षुण्ण है, - एक पूर्णता केवल उन लोगों द्वारा समझ में आती है जिनके पास दिव्य विज्ञान में मसीह की अंतिम समझ है। मृत्यु कभी अस्तित्व की इस स्थिति को जल्दबाजी नहीं कर सकती, क्योंकि अमरता प्रकट होने से पहले मृत्यु को दूर करना होगा, प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

3. **280: 1-8**

मन की अनंतता में, सामग्री को अज्ञात होना चाहिए। कलह और क्षय के प्रतीक और तत्व अनंत, परिपूर्ण और शाश्वत सभी के उत्पाद नहीं हैं। प्रेम से और प्रकाश और सद्भाव से जो आत्मा के निवास हैं, केवल अच्छे के प्रतिबिंब आ सकते हैं। सुंदर और हानिरहित सभी चीजें मन के विचार हैं। मन उन्हें बनाता है और गुणा करता है, और उत्पाद को मानसिक होना चाहिए।

4. **281: 14-17, 20-24**

जब हम गलत सोच को छोड़कर सत्य को अपना लेते हैं, और देखते हैं कि पाप और मौत का न तो कोई सिद्धांत है और न ही कोई स्थायी चीज़, हम सीखेंगे कि पाप और मृत्यु दर की कोई वास्तविक उत्पत्ति या सही अस्तित्व नहीं है।

5. **283: 1-7**

जैसे-जैसे मनुष्य आत्मा को समझने लगते हैं, वे यह विश्वास छोड़ देते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई सच्चा अस्तित्व है।

मन सभी आंदोलन का स्रोत है, और इसकी स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई की मंदता या जांच करने के लिए कोई जड़ता नहीं है। माइंड "कल, और आज, और हमेशा" जीवन, प्रेम और ज्ञान की तरह ही है।

6. **246: 23-31**

अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

7. 247: 13-27

अमरता, उम्र या क्षय से मुक्त, अपनी खुद की एक महिमा है, - आत्मा की चमक। अमर पुरुष और महिला आध्यात्मिक भावना के उदाहरण हैं, पूर्ण मन से खींचे गए और प्रेम के उन उच्च अवधारणाओं को दर्शाते हैं जो अपनी भौतिक भावना को पार करते

सुंदरता और ग्रेस चीज़ों से अलग हैं। इंसान के महसूस होने से पहले ही इंसान में अपने गुण होते हैं। सुंदरता ज़िंदगी की एक चीज़ है, जो हमेशा हमेशा रहने वाले मन में रहती है और एक्सप्रेशन, रूप, आउटलाइन और रंग में उसकी अच्छाई के आकर्षण को दिखाती है। यह प्यार ही है जो पंखुड़ी को कई रंगों से रंगता है, गर्म धूप की किरणों में झाँकता है, सुंदरता के धनुष से बादल को मोड़ता है, रात को तारों भरे रत्नों से रोशन करता है, और धरती को सुंदरता से ढक देता है।

8. 210: 11-18

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना। यीशु ने एक ही आध्यात्मिक प्रक्रिया के द्वारा बीमारी और पाप को चंगा किया।

9. 211: 24-31

अगर यह सत्य है कि नसों में उत्तेजना होता है, कि पदार्थ में बुद्धिमत्ता होती है, कि भौतिक जीव आँखों को देखने और कानों को सुनने की कारण बनता है, फिर, जब शरीर विभौतिकीकृत हो जाता है, तो ये क्षमताएँ खो जानी चाहिए, क्योंकि उनकी अमरता आत्मा में नहीं है; जबकि सत्य तो यह है कि सिर्फ़ सोच के विभौतिकीकरण और अध्यात्मीकरण से ही इन क्षमताओं को अमर माना जा सकता है।

10. 213: 7-10 (से ,), 16-19, 30-8

अमर और आध्यात्मिक तथ्य इस नश्वर और भौतिक सोच से अलग मौजूद हैं। ईश्वर, अच्छा, स्वयं विद्यमान है और स्वयं अभिव्यक्त है,

ध्वनि नश्वर विश्वास पर बनी एक मानसिक धारणा है। कान वास्तव में सुनता नहीं है। दिव्य विज्ञान ध्वनि को आत्मा की इंद्रियों के माध्यम से - आध्यात्मिक समझ के माध्यम से प्रकट करता है

इससे पहले कि मानव ज्ञान चीजों की झूठी भावना में अपनी गहराई तक डूबा हो, — भौतिक उत्पत्ति में विश्वास करते हैं जो एक मन और अस्तित्व के सच्चे स्रोत को छोड़ देते हैं, — यह संभव है कि सत्य से छापें ध्वनि के रूप में अलग थीं, और वे ध्वनि के रूप में आदिम नबियों के लिए आए थे। यदि सुनने का माध्यम पूर्ण आध्यात्मिक है, तो यह सामान्य और अविनाशी है।

यदि हनोक की धारणा उसकी भौतिक इंद्रियों के सामने सबूतों तक ही सीमित थी, तो वह कभी भी "ईश्वर के साथ नहीं चल सकता था," और न ही अनन्त जीवन के प्रदर्शन में निर्देशित हो सकता था।

11. 214: 26-7

नश्वर दृष्टि कितनी क्षणभंगुर है, जब रेटिना पर एक घाव प्रकाश और लेंस की शक्ति को समाप्त कर सकता है! किन्तु वास्तविक दृश्य या भावना खत्म नहीं होती। न तो उम्र और न ही कोई हादसा आत्मा की समझ में दखल दे सकता है, और कोई दूसरी असली समझ नहीं होती। यह साफ़ है कि शरीर में पदार्थ के तौर पर अपना कोई एहसास नहीं होता, और आत्मा और उसकी काबिलियत को कोई भुलावा नहीं है। आत्मा की काबिलियत में कोई दर्द नहीं होता, और वे हमेशा शांत रहती हैं। उनसे सभी चीज़ों का तालमेल और सच की ताकत और हमेशा रहने को कोई नहीं छिपा सकता।

यदि आत्मा, प्राण, पाप कर सके या खो सके, तो मन की सारी क्षमताओं के साथ अस्तित्व और अमरता भी खो जायेगी; मगर जब तक ईश्वर है, अस्तित्व खो नहीं सकता।

12. 215: 11-14

आध्यात्मिक दृष्टि ज्यामितिक उच्चता के अधीन नहीं है। जो कुछ भी भगवान द्वारा शासित है, वह एक पल के लिए भी बुद्धि और जीवन के प्रकाश और शक्ति से वंचित नहीं होता।

13. 490: 14-18

इंसानी सिद्धांत इंसान को सामंजस्यपूर्ण या अमर बनाने में लाचार हैं, क्योंकि वह, क्रिश्चियन साइंस के अनुसार, पहले से ही ऐसा है। हमारी आवश्यकता सिर्फ़ यह जानने की है और असली मानव के दिव्य सिद्धांत, प्रेम को अपनाना है।

14. 248: 26-29

हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे।

15. 249: 1-10

आइए विज्ञान को स्वीकार करते हैं, भाव-गवाही के आधार पर सभी सिद्धांतों को त्यागें, अपूर्ण मॉडल और भ्रामक आदर्श छोड़ दें; और इसलिए हमें एक ईश्वर, एक मन, और वह एक परिपूर्ण, उत्कृष्टता के अपने मॉडल का निर्माण करने दें।

भगवान के "नर और मादा" को प्रकट होने दें। आइए हम आत्मा की दिव्य ऊर्जा को महसूस करें, हमें जीवन के नएपन में लाएं और किसी भी नश्वर और भौतिक शक्ति को नष्ट करने में सक्षम न होने को पहचानें। आइए हम आनन्दित हों कि हम दैवीय शक्तियों के अधीन हैं। होने का सही विज्ञान ऐसा है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6